गरीबों को नकदी देने की योजनाओं पर केंद्र सरकार जल्द करे विचार

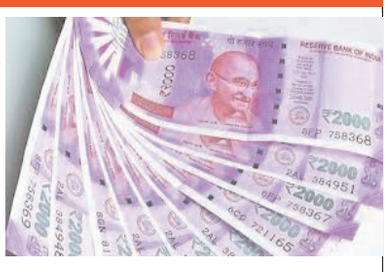

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी फिलहाल देश के सबसे प्रभावी वक्ता और कम्युनिकेटर हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है। वह अपनी इस शक्ति का इस्तेमाल अनेक उद्देश्यों के लिए करते हैं, इसलिए जब भी वह देश को सीधे संबोधित करते हैं, तब सबको यह उत्सुकता और कुछ व्यग्रता भी होती है कि आखिर इस बार प्रधानमंत्री क्या कहने वाले हैं? वैसे भी, वह संभवत: देश को सबसे ज्यादा बार सीधे संबोधित करने वाले प्रधानमंत्री हैं। उनका कल का संबोधन मुख्यत: दो नीतिगत घोषणाओं के लिए था, और इस मौके का एक और इस्तेमाल उन्होंने कोरोना से लड़ने की सरकार की रणनीति व टीकाकरण अभियान के क्रियान्वयन की आलोचना का जवाब देने के लिए किया।

सरकार की कोरोना नियंत्रण और वैक्सीन नीति की कई वजहों से, खासकर दूसरी लहर के मद्देनजर आलोचना होती रही है और एक महत्वपूर्ण मामले में अब सरकार ने सही निर्णय लिया है। केंद्र सरकार ने यह तय किया है कि अब वैक्सीन निर्माताओं से 75 प्रतिशत वैक्सीन वह खुद ही खरीदेगी, यानी राज्यों के हिस्से की वैक्सीन खरीदने की जिम्मेदारी भी अब केंद्र सरकार की होगी। सिर्फ निजी अस्पताल ही अपना 25 प्रतिशत कोटा वैक्सीन निर्माताओं से सीधे खरीदेंगे और हर टीके पर डेढ़ सौ रुपये का सेवा-शुल्क ले सकते हैं।

जब केंद्र सरकार ने पहले अपनी वैक्सीनेशन पॉलिसी घोषित की थी, जिसमें राज्यों को 25 प्रतिशत वैक्सीन सीधे खरीदनी थी, तभी यह बात सामने आई थी कि इससे राज्यों की मुसीबत बढ़ जाएगी। एक तो राज्यों को केंद्र के मुकाबले दोगुनी कीमत चुकानी थी और दूसरे, अलग-अलग राज्य को कितनी वैक्सीन मिल पाएगी, इसे लेकर भी अनिश्चय था। राज्यों पर 45 साल से कम उम्र के सभी नागरिकों को वैक्सीन लगाने की जिम्मेदार उठानी थी और दूसरी लहर के मद्देनजर लोगों में वैक्सीन लगाने की जो जल्दबाजी थी, उस वजह से कई राज्यों में वैक्सीन की कमी होने लगी। ऐसे में, कई राज्यों ने अंतरराष्ट्रीय बाजार से सीधे वैक्सीन खरीदने की कोशिश भी की, पर वे इसलिए नाकाम रहे कि वैक्सीन बनाने वाली कंपनियां राज्यों से सीधे लेन-देन करने को तैयार न थीं। तभी से कई जानकार और राज्य सरकारें भी कहती आ रही थीं कि वैक्सीन खरीदने का काम केंद्र सरकार को ही करना चाहिए।

सुप्रीम कोर्ट ने भी सरकार की टीकाकरण-नीति पर सवाल खड़े किए थे। अब सरकार ने यह फैसला करके अच्छा कदम उठाया है। इसके बाद दो बातें महत्वपूर्ण हैं- पहली, वैक्सीन वितरण की एक पारदर्शी और न्यायपूर्ण व्यवस्था तैयार करना और वैक्सीन की उपलब्धता बढ़ाने का युद्ध-स्तर पर प्रयास। प्रधानमंत्री के संबोधन में दूसरी बढ़ी घोषणा गरीबों को मुफ्त राशन मुहैया कराने की योजना को नवंबर तक बढ़ाना है। यह भी अच्छा कदम है, क्योंकि अर्थव्यवस्था की स्थिति को देखते हुए अभी गरीबों के लिए रोजी-रोटी का ठीक-ठाक इंतजाम होने में वक्त लग जाएगा। अगर दो वक्त की रोटी का इंतजाम निश्चित हो, तो अन्य समस्याओं से लड़ने की शक्ति मिलती है। इसके साथ ही केंद्र सरकार को गरीबों को सीधे नकदी देने की योजनाओं पर भी जल्दी से विचार करना चाहिए। कोरोना की दूसरी लहर के उतार के साथ अब आर्थिक गतिविधियां धीरे-धीरे शुरू हो रही हैं, अगर लोगों के हाथों में पैसा होगा, तो निस्संदेह आर्थिक गतिविधियों को तेजी मिलेगी।

जानें श्मशान में क्या सुनने जाते हैं भगवान भोले नाथ

महादेव जी को एक बार बिना कारण के किसी को प्रणाम करते देखकर पार्वती जी ने पूछा आप किसको प्रणाम करते रहते हैं? शिव जी ने पार्वती जी से कहा कि देवी! जो व्यक्ति एक बार 'राम' कहता है उसे मैं तीन बार प्रणाम करता हूं। इसके बाद पार्वती जी ने शिव जी से पूछा आप श्मशान में क्यों जाते हैं और ये चिता की भस्म शरीर पर क्यों लगाते हैं। उसी समय शिवजी पार्वती जी को श्मशान ले गए। वहां एक शव अंतिम संस्कार के लिए लाया गया। लोग 'राम नाम सत्य' कहते हुए शव को ला रहे थे। शिव जी ने कहा कि देखो पार्वती इस श्मशान की ओर जब लोग आते हैं तो 'राम' नाम का स्मरण करते हुए आते हैं। इस शव के निमित्त से कई लोगों के मुख से मेरा अतिप्रिय दिव्य 'राम' नाम निकलता है। उसी को सुनने मैं श्मशान में चला आता हूं और इतने लोगों के मुख से 'राम' नाम का जप करवाने में निमित्त बनने वाले इस शव का मैं सम्मान करता हूं, इसे प्रणाम करता हूं और अग्नि में जलने के बाद उसकी भस्म को अपने शरीर पर लगा लेता हूं। 'राम' नाम बुलवाने वाले के प्रति मुझे इतना प्रेम है।

दूसरा प्रसंग = एक बार शिवजी कैलाश पर्वत पहुंचे और पार्वती जी से भोजन मांगा। पार्वती जी विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ कर रहीं थीं। पार्वती जी ने कहा, अभी पाठ पूरा नहीं हुआ, कृपया थो?ी देर प्रतीक्षा कीजिए। शिव जी ने कहा कि इसमें तो समय और श्रम दोनों लगेंगे। संत लोग जिस तरह से सहस्त्र नाम को छोटा कर लेते हैं और नित्य जपते हैं वैसा उपाय कर लो।

पार्वती जी ने पूछा वो उपाय कैसे करते हैं? मैं भी जानना चाहती हूं। शिव जी ने बताया, केवल एक

बार 'राम' कह लो तुम्हें सहस्त्र नाम, भगवान के एक हजार नाम लेने का फल मिल जाएगा। एक 'राम' नाम हजार दिव्य नामों के समान है। प्रयास पूर्वक स्वयं भी 'राम' नाम जपते रहना चाहिए और दूसरों को भी प्रेरित करके 'राम' नाम जपवाना चाहिए। इस से अपना और दूसरों का तुरंत कल्याण हो जाता है। यही सबसे सुलभ और अचूक उपाय है, इसीलिए हमारे यहां प्रणाम 'राम' कहकर किया जाता है।

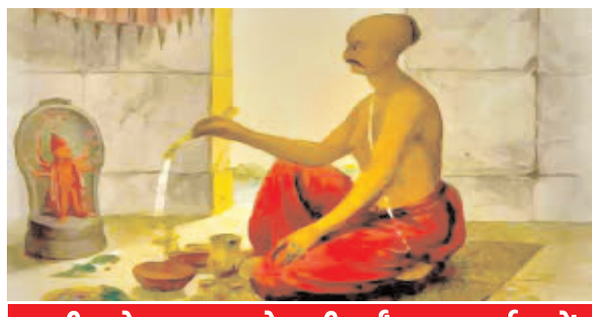

नसीब ने पूजापाठ से जुड़ी हुई महत्वपूर्ण बातें

- एक हाथ से प्रणाम नही करना चाहिए।
- सोए हुए व्यक्ति का चरण स्पर्श नहीं करना चाहिए।
- बड़ों को प्रणाम करते समय उनके दाहिने पैर पर दाहिने हाथ से और उनके बांये पैर को बांये हाथ से छूकर प्रणाम करें।
- जप करते समय जीभ या होंठ को नहीं हिलाना चाहिए। इसे उपांशु जप कहते हैं। इसका फल सौगुणा फलदायक होता हैं।
- जप करते समय दाहिने हाथ को कपड़े या गौमुखी से ढककर रखना चाहिए।
- जप के बाद आसन के नीचे की भूमि को स्पर्श कर नेत्रों से लगाना चाहिए।
- संक्रान्ति, द्वादशी, अमावस्या, पूर्णिमा, रविवार और सन्ध्या के समय तुलसी तोड़ना निषिद्ध हैं।
- दीपक से दीपक को नही जलाना चाहिए।
- यज्ञ, श्राद्ध आदि में काले तिल का प्रयोग करना चाहिए, सफेद तिल का नहीं।
- शनिवार को पीपल पर जल च?ाना चाहिए। पीपल की सात परिक्रमा करनी चाहिए। परिक्रमा करना श्रेष्ठ है,
- कूमड़ा-मतीरा-नारियल आदि को स्त्रियां नहीं तोड़े या चाकू आदि से नहीं काटें। यह उत्तम नही माना गया हैं।
- भोजन प्रसाद को लाघंना नहीं चाहिए।
- देव प्रतिमा देखकर अवश्य प्रणाम करें।
- किसी को भी कोई वस्तु या दान-दक्षिणा दाहिने हाथ से देना चाहिए।
- एकादशी, अमावस्या, कृष्ण चतुर्दशी, पूर्णिमा व्रत तथा श्राद्ध के दिन क्षौर-कर्म (दाढ़ी) नहीं बनाना चाहिए ।
- बिना यज्ञोपवित या शिखा बंधन के जो भी कार्य, कर्म किया जाता है, वह निष्फल हो जाता हैं।
- शंकर जी को बिल्वपत्र, विष्णु जी को तुलसी, गणेश जी को दूर्वा, लक्ष्मी जी को कमल प्रिय हैं।
- शंकर जी को शिवरात्रि के सिवाय कुमकुम नहीं चढ़ती।
- शिवजी को कुंद, विष्णु जी को धतूरा, देवी जी को आक तथा मदार और सूर्य भगवानको तगर के फूल नहीं च?ावे।
- अक्षत देवताओं को तीन बार तथा पितरों को एक बार धोकर च?ावे।
- नये बिल्व पत्र नहीं मिले तो चढ़ाये हुए बिल्व पत्र धोकर फिर च?ाए जा सकते हैं।
- विष्णु भगवान को चावल गणेश जी को तुलसी, दुर्गा जी और सूर्य नारायण को बिल्व पत्र नहीं चढ़ावें।
- पत्र-पुष्प-फल का मुख नीचे करके नहीं चढ़ावें, जैसे उत्पन्न होते हों वैसे ही चढ़ावें।
- किंतु बिल्वपत्र उलटा करके डंडी तोड़कर शंकर पर चढ़ावें।
- पान की डंडी का अग्रभाग तोड़कर चढ़ावें।
- सड़ा हुआ पान या पुष्प नहीं चढ़ावे।
- गणेश को तुलसी भाद्र शुक्ल चतुर्थी को चढ़ती हैं।
- पांच रात्रि तक कमल का फूल बासी नहीं होता है।
- दस रात्रि तक तुलसी पत्र बासी नहीं होते हैं।
- सभी धार्मिक कार्यो में पत्नी को दाहिने भाग में बिठाकर धार्मिक क्रियाएं सम्पन्न करनी चाहिए।
- पूजन करनेवाला ललाट पर तिलक लगाकर ही पूजा करें।
- पूर्वाभिमुख बैठकर अपने बांयी ओर घंटा, धूप तथा दाहिनी ओर शंख, जलपात्र एवं पूजन सामग्री रखें।
- घी का दीपक अपने बांयी ओर तथा देवता को दाहिने ओर रखें एवं चांवल पर दीपक रखकर प्रज्वलित करें।
- गणेशजी को तुलसी का पत्र छोड़कर सब पत्र प्रिय हैं। भैरव की पूजा में तुलसी स्वीकार्य नहीं है।
- कुंद का पुष्प शिव को माघ महीने को छोड़कर निषेध है।
- बिना स्नान किये जो तुलसी पत्र जो तोड़ता है उसे देवता स्वीकार नहीं करते।
- रविवार को दूर्वा नहीं तोड़नी चाहिए।
- केतकी पुष्प शिव को नहीं चढ़ाना चाहिए।
- केतकी पुष्प से कार्तिक माह में विष्णु की पूजा अवश्य करें।
- देवताओं के सामने प्रज्जवलित दीप को बुझाना नहीं चाहिए।
- शालिग्राम का आवाह्न तथा विसर्जन नहीं होता।
- जो मूर्ति स्थापित हो उसमें आवाहन और विसर्जन नहीं होता।
- तुलसीपत्र को मध्यान्ह के बाद ग्रहण न करें।
- पूजा करते समय यदि गुरुदेव,ज्येष्ठ व्यक्ति या पूज्य व्यक्ति आ जाए तो उनको उठ कर प्रणाम कर उनकी आज्ञा से शेष कर्म को समाप्त करें।
- मिट्टी की मूर्ति का आवाहन और विसर्जन होता है और अंत में शास्त्रीयविधि से गंगा प्रवाह भी किया जाता है।
- कमल को पांच रात,बिल्वपत्र को दस रात और तुलसी को ग्यारह रात बाद शुद्ध करके पूजन के कार्य में लिया जा सकता है।
- पंचामृत में यदि सब वस्तु प्राप्त न हो सके तो केवल दुग्ध से स्नान कराने मात्र से पंचामृतजन्य फल जाता है।
- शालिग्राम पर अक्षत नहीं चढ़ता। लाल रंग मिश्रित चावल चढ़ाया जा सकता है।
- हाथ में धारण किये पुष्प, तांबे के पात्र में चन्दन और चर्म पात्र में गंगाजल अपवित्र हो जाते हैं।
- पिघला हुआ घी और पतला चन्दन नहीं चढ़ाना चाहिए।
- प्रतिदिन की पूजा में सफलता के लिए दक्षिणा अवश्य चढ़ाएं।
- आसन, शयन, दान, भोजन, वस्त्र संग्रह, विवाद और विवाह के समयों पर छींक शुभ मानी गई है।
- जो मलिन वस्त्र पहनकर, मूषक आदि के काटे वस्त्र, केशादि बाल कर्तन युक्त और मुख दुर्गन्ध युक्त हो, जप आदि करता है उसे देवता नाश कर देते हैं।
- मिट्टी, गोबर को निशा में और प्रदोषकाल में गोमूत्र को ग्रहण न करें।
- मूर्ति स्नान में मूर्ति को अंगूठे से न रगड़ें।
- पीपल को नित्य नमस्कार पूर्वाह्न के पश्चात् दोपहर में ही करना चाहिए। इसके बाद न करें।
- जहां अपूज्यों की पूजा होती है और विद्वानों का अनादर होता है, उस स्थान पर दुर्भिक्ष, मरण और भय उत्पन्न होता है।
- पौष मास की शुक्ल दशमी तिथि, चैत्र की शुक्ल पंचमी और श्रावण की पूर्णिमा तिथि को लक्ष्मी प्राप्ति के लिए लक्ष्मी का पूजन करें।
- कृष्णपक्ष में, रिक्तिका तिथि में, श्रवणादी नक्षत्र में लक्ष्मी की पूजा न करें।
- अपराह्नकाल में, रात्रि में, कृष्ण पक्ष में, द्वादशी तिथि में और अष्टमी को लक्ष्मी का पूजन प्रारम्भ न करें।
- मंडप के नव भाग होते हैं, वे सब बराबर-बराबर के होते हैं अर्थात् मंडप सब तरफ से चतुरासन होता है, अर्थात् टेढ़ा नहीं होता। जिस कुंड की श्रृंगार द्वारा रचना नहीं होती वह यजमान का नाश करता है।
- पूजा-पाठ करते समय हो जाए कुछ गलती तो अंत में जरूर बोलें ये एक मंत्र

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥
मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन।
यत्पूजितं मया देव! परिपूर्ण तदस्तु मे॥

कलौंजी के औषधीय गुणों को भी जानें

कलौंजी भी आयुर्वेदिक औषधि है, जो हमारे शरीर को कई तरह के रोगों से बचाती है और शरीर के अतिरिक्त वजन को घटाने में मदद करती है। इसे ब्लड प्रेशर भी कम हुआ। सबसे बडी बात यह है कि इसका कोई साइड-इफेक्ट नहीं होता है। इसे महत्वपूर्ण चिकित्सक हर्ब माना जाता है।

इन रशियों में मां लक्ष्मी की विशेष कृपा रहती है

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार कुल 12 राशियां होती हैं। इन सभी राशियों के कोई-न-कोई ग्रह स्वामी जरूर होते हैं। राशि स्वामी हर राशि पर अपनी विशेष कृपया रखते है। ऐसे ही मां लक्ष्मी कुछ राशियों में काफी मेहरबान होती है। मां लक्ष्मी वैभव और यश की देवी है। एक बार यह अगर यह किसी पर अपनी कृपया कर दे तो उसे कभी भी धन की कमी नही होती। वह इंसान ऐश्वर्या से भरपूर रहता है। इन चार राशि वाले जातक पैसों के मामले में काफी लकी होते हैं और मां लक्ष्मी की हमेशा उन पर कृपा बनी रहती है। इन चार राशि के जातकों में ऐसी खूबियां होती हैं, जिनके चलते इन्हें हर क्षेत्र में सफलता हासिल होती है।

वृष

वृष राशि के स्वामी शुक्र हैं। इन राशि के जातकों पर मां लक्ष्मी की विशेष कृपा बनी रहती है।वृष राशि के जातकों को हमेशा किस्मत का साथ मिलता है। मनुष्य के जीवन में धन, प्रेम और वैभव शुक्र ग्रह के प्रभाव से आते है। इस राशि के जातकों को कम प्रयासों में ही अच्छी सफलता मिल जाती है। इनके सामने कभी पैसों की दिक्कत नहीं आती।

कर्क

इस राशि के स्वामी चंद्रमा हैं। ऐसा माना जाता है कि इस राशि के जातकों का जीवन हमेशा सुख-सुविधाओं से भरा रहता है। ज्यादा मेहनत करने के कारण इन राशि के जातकों पर मां लक्ष्मी की विशेष कृपा बनी रहती है। अगर ये किसी काम को अपने हाथ में लें तो उसे पूरा कर के ही मानते हैं। इन राशि के जातकों के काम में मुश्किल आने पर भी वह हर काम को आसानी से कर लेते है।

सिंह

इस राशि के स्वामी सूर्य ग्रह हैं। यह सभी राशियों में से सबसे ज्यादा प्रभावशाली होते है। सिंह राशि वाले लोग धार्मिक स्वभाव के होते हैं। इस राशि के जातक अपने जीवन में सुख-सुविधाओं को बनाएं रखने के लिए कड़ी मेहनत भी करते हैं। इन राशि के जातकों पर मां लक्ष्मी का आशीर्वाद हमेशा बना रहता है।

वृश्चिक

वृश्चिक राशि के स्वामी मंगल ग्रह हैं। मंगल के प्रभाव से ये लोग बेहद ही मेहनती, ऊर्जावान और उत्साह से भरे होते हैं। इस राशि के जातक अपनी सूझबूझ से हर समस्या का हल खोज निकालते हैं। मां लक्ष्मी के आशीर्वाद से इन राशि के जातकों को कभी धन की कमी नहीं होती।

कछुआ से लाए घर में ढेर सारी सुख और समृद्धि

वास्तु तथा चाईनीज वास्तु अर्थात फेंगशुई शास्त्र के सिद्धांतों को अपनाकर व्यक्ति जीवन में सुख-समृद्धि और खुशियां पा सकता है तथा छोटे-छोटे उपाय अपनाकर अपनी सभी इच्छाओं की पूर्ति की जा सकती है तथा सर्वदा के लिए धन और ?श्वर्य की देवी लक्ष्मी जी को भी अपने घर में स्थायित्व दिया जा सकता है। यही वजह है कि वास्तु और फेंग शुई में कछुए की खास जगह है और फेंग शुई के ज्यादात्र सिंबल्स में कछुआ मिलता ही है। माना जाता है कि अगर इसे घर में सही दिशा में और सही जगह पर रखा जाए तो घर में सुख-समृद्धि जरूर आती है।

व्यापार में सफलता के अचूक उपाय

हर शख्स अपने जीवन में उन्नति के लिए व्यवसाय शुरू करता है परन्तु कई बार यह देखने में आता है कि व्यक्ति मेहनत तो बहुत करता है-परंतु उतना लाभ उसको नहीं मिलता। जिससे वह हमेशा दुखी रहता है। किसी भी व्यवसाय में सफलता के लिए कुछ बातें बहुत महत्वपूर्ण होती हैं मसलन – प्रॉपर प्लानिंग, धन या फाइनेंस, योजना को किस तरह से क्रियान्वित करना है, टीम मैनेजमेंट आदि। इन सारी चीजों में पैसा या फाइनेंस सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि अगर आपके पास समुचित धन नहीं होगा तो आप चाहे कितनी भी योजनाएं क्यों ना बना लें उसे क्रियान्वित नहीं कर पायेंगे। हम बताते हैं कि वास्तु के किन उपायों का उपयोग करके आप अपने व्यवसाय में लाभ कमा सकते हैं।

गर्भवती महिलाओं के लिए लाभदायक माना जाता है यह रत्न

तंत्र शास्त्र के अंतर्गत कई प्रकार के पत्थरों का प्रयोग किया जाता है, ऐसा माना जाता है कि इनकी सहायता से कार्य जल्द ही पूर्ण हो जाते हैं। तन्त्र शास्त्र में प्रयोग किया जाने वाला ऐसा ही एक पत्थर है हकीक, इस पत्थर के पीछे यह भी मान्यता हैं कि जिसके घर में हकीक पत्थर होता है, उसके घर में कभी भी आर्थिक तंगी नहीं होती। तंत्र शास्त्र में हकीक पत्थर का विशेष महत्व होता हैं, जिसका प्रयोग अलग-अलग टोटकों को सफल बनाने के लिए किया जाता हैं।

यह एक शांति पूर्ण रत्न है जो लोगों की मुश्किल घड़ी में मदद करता है और उन्हें शांति प्रदान करता है। हकीक से आंतरिक शक्ति और मज़बूती प्राप्त होती है। यह तनाव पूर्ण परिस्थितियों में भी काफी मददगार साबित होता है। हकीक आपको व्यावहारिक निर्णय लेने वाली स्थितियों में शांत बनाए रखता है। हकीक दैविक ऊर्जा के साथ संपर्क बनाए रखने में मदद करता है। हकीक पत्थर को लक्ष्मी माता का प्रतिरूप भी माना जाता हैं। तंत्र शास्त्र के साथ-साथ हकीक पत्थर का प्रयोग पूजा-अर्चना तथा किसी भी देव की उपासना व साधना करने के लिए भी काफी किया जाता है। पत्थर से कई ऐसे चमत्कारी उपाय किया जा सकते हैं, जिससे दरिद्रता लोगों के आसपास भी नहीं फटकती। जो लोग हकीक के बारे में थो?ी भी जानकारी रखते हैं, उन्हें काले हकीक की माला के बारे में जरूर जानकारी होती है। यह एक ऐसी माला है जो सबसे अधिक प्रसिद्ध है। कहते हैं काले हकीक के मोतियों की माला पहनने से मानसिक शांति मिलती है। इसके अलावा यह हमारी कार्य के प्रति एकाग्रता को ब?ाता है। गर्भवती महिलाओं के लिए यह रत्न अच्छा और फायदेमंद माना जाता है।

एसएसपी गुरदासपुर ने मिनी सचिवालय में पौधरोपण कर मनाया पर्यावरण दिवस

लोगों से अपील है कि ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाएं

गुरदासपुर। अनमोल खबरें (रंजीत आजाद) गुरदासपुर वेलफेयर सोसाइटी ने आज जिला प्रशासन में पौधारोपण कर पर्यावरण दिवस मनाया। इसकी शुरुआत डॉ. नानक सिंह एसएसपी गुरदासपुर ने की।

इस मौके पर एसएसपी डॉ. नानक सिंह ने कहा कि गुरदासपुर वेलफेयर सोसाइटी की यह पहल पर तारीफ है. इसे देखते हुए सभी को अपने आसपास एक पौधा जरूर लगाना चाहिए। पौधे हमें जीवित रखने के लिए ऑक्सीजन प्रदान करते हैं।

एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि जिले को अपराध मुक्त बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि पुलिस प्रशासन ने अब तक कई लोगों को डकैती, सेंधमारी, चोरी और हत्या के आरोप में सलाखों के पीछे भेजा है और यह सिलसिला जारी है ताकि लोग सुरक्षित महसूस कर सकें.